eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलता का पूर्णनुमान परिपेक्ष में श्री अरविंद घोष के शिक्षक मूल्य

नीलम देवी[1] एवं डा0 अमित भारद्वाज[2]
[1]शोधार्थी, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0
[2]शोध पर्यवेक्षक, श्री वेंकेटेश्वर यूनिवर्सिटी गजरौला, उ0प्र0

Received: 20 July 2025, Accepted: 25 July 2025, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2025

Abstract

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं होता तो मनुष्य एक पशु के समान होता उससे अच्छा बुरा समझने का ज्ञान नहीं होता। शिक्षा वह एक प्रकाश है जिसकी एक ज्योति से समाज का विकास होता है। शिक्षा के द्वारा बालक को एक अच्छा बनता देख सकते है। जिससे बच्चे का शारीरिक जीवन में उपयोगी मानसिक विवेक और आध्यात्मिक विकास हो सके। अगर हमें शिक्षा का ज्ञान होता है तो सभी दिशाओं का ज्ञान होता है जिससे हमें मालूम हो जाता है मालूम हो जाता है कहां क्या घटित हुआ है यह होने वाला है अगर हमें ज्ञान नहीं होता तो क्या हम उनके बारे में सोने का मौका मिल पाता। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा ही वह ज्योति है जो बालक को अंधेरे जीवन में एक रोशनी भर सकती है। शिक्षा के मानसिक बुद्धि चिंतन कल्पना शक्ति का भी रूप होना चाहिए। शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान का माध्यम नहीं है। बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक भावनात्मक और आध्यात्मिक में सहायता प्रदान करती है।

श्री अरविंद घोष का जन्म 15 अगस्त सन 1872 में बंगाल के कोलकाता में हुआ था इनके पिता एक डॉक्टर थे इन्होंने युवावस्था में स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी के रूप में भाग लिया किंतु बाद में यह एक जोगी व साधु बन गए और इन्होंने पांडिचेरी में एक आश्रम की स्थापना की। उन्होंने कई ग्रंथों की समन्वय जैसे वेद उपनिषद् आदि इसी तरह आधुनिक मनोविज्ञान में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शैक्षणिक और वेबसाइट सफलता के लिए महत्वपूर्ण माना है यह शोध पत्र भी अरविंद घोष के शिक्षक मूल्यों और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच के संबंधों का विशेषण करता है तथा उनके सी हाथों की प्रासंगिकता को वर्तमान शैक्षणिक और व्यावसायिक वातावरण में मानता है।

मुख्य शब्द – आत्मनिरंतर, मानसिक अनुशासन, आत्म जागरूकता, आंतरिक विकास

Introduction

शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं है बल्कि यह व्यक्ति के मानसिक भावनात्मक वैवाहिक और आध्यात्मिक विकास में सहायक होती है जो अरविंद घोष जो एक महान दार्शनिक योगी और शिक्षा के विद्वान थे उसी तरह आज के आधुनिक मनोविज्ञान में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण माना गया है यह शोध पत्र श्री अरविंद घोष के शैक्षिक मूल्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच में संबंधों का विशेषण करता है तथा उनके सिद्धांतों की परिकल्पना करता है।

समस्या कथन– शैक्षणिक और वेबसाइट सफलता का पूर्वनुमान करने वाला भावनात्मक बुद्धिमत्ता वर्तमान परिपेक्ष में श्री अरविंद के शैक्षिक मूल्य।

अध्ययन के उद्देश्य– यह अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए किया गया है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

1– श्री अरविंद के शशिक दर्शन का विशेषण करना और उसके मूल्य सिद्धांतों को समझना।

2– भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा को स्पष्ट करना और इसकी व्यावसायिक एवं शैक्षणिक सफलता में भूमिका को जांचना।

3– श्री अरविंद के शिक्षक विचारों और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के घटकों के बीच संबंध स्थापित करना।

4– शिक्षा प्रणाली में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समग्र विकास आधारित शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए सुझाव देना।

5– वर्तमान शैक्षिक और व्यावसायिक वातावरण में जो श्री अरविंद घोष की शिक्षण पद्धतियों की प्रासंगिकता की समीक्षा करना।

अध्ययन का महत्व– यह अध्ययन शिक्षा और व्यावसायिक सफलता में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका को स्पष्ट करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इसकी महत्व को समझा जा सकता है।

1– शिक्षा में सुधार– श्री अरविंद की शिक्षण पद्धति और EI के सहायता के एकीकरण से शिक्षा प्रणाली के अधिक प्रभाव बनाया जा सकता है।

2– व्यवसायिक सफलता– आत्म जागरूकता आत्मनिर्तन प्रेरणा और सामाजिक कौशल कार्यालय स्थल पर सफलता के लिए आवश्यक है।

3– मानसिक स्वास्थ्य– यह अध्ययन छात्रों और पेशावर ऑन को भावनात्मक संतुलन बनाए रखने और तनाव प्रबंधन को तकनीकियों को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकता है।

4– नेतृत्व और सामाजिक कौशल– सहानुभूति और सामाजिक कौशल के विकास से प्रभावी नेतृत्व और वर्क को बढ़ावा दिया जा सकता है।

5– सामाजिक समरसता– भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्यम से बेहतर समाज और कार्य स्थल संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है।

आत्मा जागरुकता और आंतरिक विकास– श्री अरविंद घोष का मानना था कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य आत्मा जागरुकता और आंतरिक विकास होना चाहिए। यह म् की आत्म जागरूकता घटक से मेल खाता है जो व्यक्ति को अपनी ताकत कमजोरी और भावनाओं में मदद करता है। वर्तमान समय में जहां विद्यार्थी अत्यधिक शैक्षणिक हवस का सामना कर रहे हैं और पेशेवर मानसिक तनाव से जूझ रहे हैं श्री अरविंद द्वारा सुझाई गई सजगता और आत्म चिंतन जैसे तकनीकी आत्म जागरूकता विकसित करने में सहायक हो सकती है इनमें मानसिक स्वास्थ्य भावनात्मक संतुलन और ध्यान क्रेडिट करने की क्षमता में वृद्धि होती है।

आत्मनिर्तन और मानसिक अनुशासन– श्री अरविंद ने शिक्षा के माध्यम से आत्मनिर्तन और मानसिक अनुशासन को विकसित करने पर बल दिया, म् के आत्म नियम घटक से मेल खाता है जो व्यक्ति को नरकात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने और शांतिपूर्ण निर्णय लेने में मदद करता है।
प्रेरणा और उत्कृटता की खोज– श्री अरविंद घोष का मानना था कि शिक्षा केवल भौतिक सफलता के लिए नहीं बल्कि आत्म साक्षात्कार और ज्ञान बांटने की प्रति का साधन होना चाहिए आज के आधुनिक समय में शिक्षा प्रणाली ज्यादातर ज्ञान अर्जुन की वजह अंकों को और परसेंटेज को ज्यादा महत्व दिया जाता है

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED JOURNAL
Volume 08, Issue 02, July 2025

अरविंद घोष की यह सोचने की आत्म सुधार की उच्च उद्देश्य प्रति कम मध्य होना चाहिए छात्रों और पेशवारों की उपयोगिता की वजह आत्मसमर्पण और जुनून के साथ ज्ञान प्राप्त के लिए प्रेरित कर सकती है।

सहानुभूति और मानवीय एकता– श्री अरविंद ने भाईचारे की अवधारणा को महत्व दिया और शिक्षा को प्रेम सहानुभूति और एकता को प्रोत्साहित करने वाला बताया। आधुनिक समय में समझ में जहां सामाजिक कार्यस्थल पर संघर्ष और भावनात्मक जुड़ाव में कभी आम हो गई है। श्री अरविंद की सहानुभूति आधुनिक शिक्षा की अवधारणा अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

सामाजिक कौशल और नेतृत्व विकास– श्री अरविंद घोष एक सच्चा शिक्षित व्यक्ति अपने आचरण से दूसरों का मार्गदर्शन करता है और स्वयं की विकास और सामूहिक थाली के लिए कार्यकर्ता है EI के सामाजिक कौशल जैसे स्वाद कौशल संघर्ष कौशल और टीमवर्क। शैक्षणिक और व्यावसायिक क्षेत्र मैं नेतृत्व के लिए अत्यंत आवश्यक है वर्तमान परिपेक्ष में आज के समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ने के कारण तकनीकी कौशल प्रलय नहीं हो रहा है श्री अरविंद की भावनात्मक बुद्धिमत्ता से जुड़े विचार ऐसे भूषणों के विकास को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष– श्री अरविंद घोष की अवधारणा और आधुनिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता दोनों ही आत्म जागरूकता भावनात्मक नियंत्रण आंतरिक प्रेरणा सहानुभूति और सामाजिक कौशल के महत्व को बड़े ही उचित ढंग से दर्शाते हैं। अगर हम इन मूल्यों को शिक्षा में शामिल करने से सिर्फ किताबिक ज्ञान प्राप्त करने वाली नहीं बल्कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान नैतिक और सफल नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं जो समाज में रहकर सकारात्मक योगदान में दे सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1– अरविंदो (1985) द लाइफ डिवाइन लोटस प्रेस

2– अरुण पुष्पा (2004) महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का विशेषनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान परिपेक्ष में उसकी प्रासंगिकता लघु शोध प्रबंधन शिक्षा एवं संबद्ध विज्ञान संकाय रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली

3– तरुण हरिवंश, (2005) भारतीय शिक्षा उसकी समस्या तथा विश्व की शिक्षा प्रणाली नई दिल्ली प्रशासन संस्थान PP.18–20

4– देव.बी.आर.(1981) महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन में आध्यात्मिक तत्व पी०एच०डी० एजुकेशन एम०एस०यू०

5– श्री अरविंद (1994) मानव चक्र पांडिचेरी श्री अरविंद आश्रम